Sitaram Maroo

Sitaram Maroo was born on October 11, 1925, in Ranchi. His father, Chauthmal Maroo, originally from Renwal, Rajasthan, migrated to Ranchi in 1920 for business purposes. From an early age, Sitaram Maroo became an active volunteer of the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS).

Alongside his business pursuits, Sitaram Maroo developed a deep commitment to social service from an early age. In 1951, he became Secretary of Ranchi's renowned social organisation, the Marwari Sahayak Samiti. In 1958, along with other visionaries, he helped establish Nagarmal Modi Seva Sadan, a charitable hospital.

Further, strengthening nationalist ideals, he launched a weekly, "Jai Matribhoomi," in Patna. In 1986, he became President of Sanskriti Vihar, the oldest cultural institution in South Bihar, now Jharkhand. Under his leadership, the organisation initiated night schools, rural medical camps, and eye-care programs, especially serving leprosy patients and marginalised communities.

That same year, he laid the foundation for a spiritual centre dedicated to Lord Bhuvan Bhaskar (Surya Narayan) on a hill near NH-33, between Ranchi and Jamshedpur. Today, it stands as a revered religious and tourist destination in Jharkhand. From this centre, Sitaram Maroo launched Shishu Mandirs, promoting value-based education. More than 2,000 students across eight schools are currently being educated from classes 1 to 10.

In recognition of his humanitarian efforts, he was honoured with the Manav Mitra Samman on January 25, 1997. That same year, the Rajasthan Parishad of Kolkata awarded him the title of "Social Worker of South Bihar" during Pratap Jayanti.

To promote Indian culture, he initiated a Geeta Press (Gorakhpur) sales centre from his office premises, providing easy access to spiritual literature for the people of the region. He passed away on December 6, 2003.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Sitaram Maroo, for his dedication to nation-building, social service, and cultural revival.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/: Cancellation Cachet		Ms. Ravneet Kaur
Text	:	Referenced from content provided by proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts



सीताराम मारू Sitaram Maroo

विवरणिका BROCHURE

सीताराम मारू

सीताराम मारू का जन्म 11 अक्तूबर, 1925 को रांची में हुआ था। उनके पिता श्री चौथमल मारू मूलतः रेनवाल, राजस्थान से थे लेकिन व्यवसाय के उद्देश्य से वे सन् 1920 में रांची जाकर बस गए। कम आयु से ही सीताराम मारू राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सक्रिय स्वयंसेवक बन गए।

अपना व्यवसाय करने के साथ–साथ, सीताराम मारू में कम आयु से ही समाजसेवा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता विकसित हो गई थी। सन् 1951 में, वे रांची के सुप्रसिद्ध सामाजिक संगठन "मारवाड़ी सहायक समिति" के सचिव बने। 1958 में, उन्होंने कुछ अन्य दूरदर्शी व्यक्तियों के साथ मिलकर एक चैरिटेबल अस्पताल "नागरमल मोदी सेवा सदन" स्थापित करने में सहायता प्रदान की।

आगे चलकर उन्होंने राष्ट्रवादी विचारों को और अधिक धार देने के लिए, उन्होनें पटना में एक साप्ताहिक "जय मातृभूमि" का प्रकाशन आरम्भ किया। 1986 में वे दक्षिणी बिहार (वर्तमान में झारखंड) के सबसे पुराने सांस्कृतिक संस्थान संस्कृति विहार के अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में, संस्थान ने रात्रि विद्यालय, ग्रामीण चिकित्सा शिविर और नेत्र–देखभाल कार्यक्रम आरंभ किए, जिनमें विशेषकर कुष्ठ रोगियों और वंचित समुदायों को सेवाएं प्रदान की गईं।

उसी वर्ष, उन्होंने रांची और जमशेदपुर के मध्य, राष्ट्रीय राजमार्ग–33 के पास स्थित एक पहाड़ी पर, भगवान भुवन भास्कर (सूर्य नारायण) को समर्पित एक आध्यात्मिक केंद्र की नींव रखी। आज यह झारखंड का एक प्रमुख तीर्थ और मुख्य पर्यटन स्थल बनकर उभरा है। इस केंद्र से सीताराम मारू ने मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देते हुए शिशु मंदिरों की शुरुआत की। वर्तमान में, ऐसे आठ विद्यालयों में कक्षा 1 से 10 तक के 2000 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

उनके मानवतावादी प्रयासों को सम्मानित करते हुए, दिनांक 25 जनवरी, 1997 को उन्हें मानव मित्र सम्मान से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष कोलकाता की राजस्थान परिषद ने प्रताप जयंती के दौरान उन्हें "दक्षिणी बिहार के समाजसेवक" की उपाधि से सम्मानित किया।

भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने के लिए, सीताराम मारू ने अपने कार्यालय परिसर से गीताप्रेस (गोरखपुर) का एक विक्रय केंद्र शुरू किया, ताकि क्षेत्र के लोगों के लिए आध्यात्मिक साहित्य आसानी से उपलब्ध हो सके। इनका निधन 6 दिसंबर, 2003 को हुआ था।

डाक विभाग, राष्ट्र निर्माण, समाज सेवा और सांस्कृतिक पुनरूत्थान के क्षेत्र में सीताराम मारू के योगदान के लिए स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री रवनीत कौर

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	304450
Stamps Printed	:	304450
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00